डॉ. माशेलकर द्वारा भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इन्सा) के इलेक्ट्रॉनिक-पत्रिका पोर्टल का शुभारम्भ

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इन्सा) की राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में आयोजित 69 वीं वार्षिक साधारण सभा में डॉ. र.अ.माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर ने उक्त अकादमी के इलेक्ट्रॉनिक-पत्रिका पोर्टल का शुभारम्भ किया । इन्सा की पत्रिकाएँ **http:www.insa.ac.in/html/home.asp** पर निःशुल्क उपलब्ध हैं । इस हेतु नाममात्र के लिए /साधारण पंजीकरण करवाना होगा ।

डॉ. माशेलकर ने अपने उद्घाटन सम्बोधन में अपनी पत्रिकाओं के इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन हेतु अकादमी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की । उन्होंने कहा कि यद्यपि भारत में लगभग 3500 वैज्ञानिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं फिर भी इन्टरनेट के कारण आज ऐसी स्थिति हो गई है कि, **यदि आप आप वेबसाइट पर उपलब्ध नहीं है तो इस विश्व में आपका अस्तित्व नहीं के बराबर है ।** उन्होंने बताया कि भले ही संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा 162 देशों की प्रौद्योगिकीय सूची में भारत को 63 वाँ स्थान दिया गया हो, तथापि विकास की दिशा कई मानदण्डों द्वारा निर्धारित की जाती है और 1 अरब लोगों के लिए प्रदर्शित प्रगति सूचक में हमारी प्रगति शून्य दिखाई देती है । उन्होंने आगे कहा कि इण्डोनेशिया जैसे देशों के कुल प्रकाशनों की संख्या एनसीएल से कम होने पर भी उन्हें उक्त प्रगति सूचक में भारत से ऊपर का स्थान प्राप्त हुआ है । इस अवसर पर भारत के प्रतिभाशाली व्यक्तियों के विदेश से वापस अपने देश लौटने(रिवर्स ब्रेनड्रेन) के सम्बन्ध में उन्होंने सूचित किया कि पिछले कुछ वर्षों से कई सॉफ्टवेयर विशेषज्ञ अपनी इच्छा से भारत लौट रहे हैं । यह भी एक तथ्य है कि विश्व की बड़ी कम्पनियाँ, जिनका निजी बजट भारत के अनुसंधान एवं विकास के कुल निवेश से अधिक है, भारत में अपने अनुसंधान एवं विकास केन्द्र स्थापित कर रहीं हैं। ये निजी अनुसंधान एवं विकास केन्द्र तथा उद्योग जगत बड़ी संख्या में पीएच.डी.उपाधि धारकों तथा अन्य विशेषज्ञों की भर्ती कर रहे हैं । इससे भारतीय प्रतिभा को अपने ही देश में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है । उन्होंने इन्सा का आह्वान किया कि यही सही समय है जब हमें विदेशों से वैज्ञानिकों एवं उद्योगों को आकर्षित करने हेतु अर्थपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन आरम्भ करने चाहिए ।

दिनांक 27 एवं 28 दिसम्बर, 2003 को आयोजित इन्सा की दो दिवसीय वार्षिक साधारण सभा के कार्यक्रमों के अन्तर्गत भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी परिषद की बैठक और **ओपन ऐक्सेस टू साइंटिफिक नौलेज** नामक विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ । इसके अलावा इस अवसर पर डॉ. नौशिर एच. वाडिया, निदेशक, तन्त्रिका विज्ञान (न्यूरोलॉजी) विभाग, जसलोक अस्पताल अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई तथा प्रो. एम.एस.वैलिएथन, अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी ने क्रमशः **न्यूरोलॉजिकल रिसर्च ऐज वी डिड इट** तथा **द चित्रा वॉल्व स्टोरी** नामक विषयों पर लोकप्रिय वैज्ञानिक व्याख्यान दिए ।

ओपन ऐक्सेस टू साइंटिफिक नौलेज (मुक्त वैज्ञानिक ज्ञान) पर आयोजित संगोष्ठी के एक भाग के रूप में डॉ. माशेलकर द्वारा **वैज्ञानिक आँकड़े एवं सूचना : वैज्ञानिक ज्ञान में प्रवेश एवं बौद्धिक सम्पदा की सुरक्षा पर विकासशील विश्व का परिदृश्य** नामक विषय पर दिए गए उद्‌घाटन-व्याख्यान के अतिरिक्त सात आमंत्रित व्याख्यान भी प्रस्तुत किए गए । विभेदी शुल्क नीति का समर्थन करते हुए डॉ. माशेलकर ने कहा कि विकसित एवं विकासशील देशों के ग्राहकों से अलग-अलग शुल्क वसूल करना चाहिए । उन्होंने आगे कहा कि आज आँकड़ों का वितरण (डेटा डिस्ट्रिब्यूशन) मुख्य रुप से निजी क्षेत्र के हाथों में है । अनेक वैज्ञानिक पत्रिकाएँ इन्टरनेट पर निशुल्क उपलब्ध हैं । अंकीय सूचना के अंतर को खत्म करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं एफएओ जैसी संयुक्त राष्ट्र की एजेन्सियाँ पहल कर रही हैं । पत्रिका की लागत एवं पृष्ठों के प्रभार का भुगतान कौन करेगा, के सम्बन्ध में अनुसंधान पत्रिकाओं का सन्दर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि इसके लिए भारत के पास क्षमता है और उसे विश्व को अपना नेतृत्व प्रदान करना चाहिए । उद्‌घाटन-सत्र का समापन करते हुए प्रो. एमएस वैलिएथन ने कहा कि खुला प्रवेश का प्रस्ताव हमें अच्छा लगता है तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समुदाय तथा शिक्षा संस्थान भी खुले प्रवेश के पक्ष में हैं । किन्तु समस्या प्रकाशन कम्पनियों की है जो केवल लाभ की दृष्टि से ही कार्य करती हैं। उन्होने आगे कहा कि सार्वजनिक निधि से सहायता प्राप्त अनुसंधान कार्य लाभ कमाने वाली कम्पनियों के लिए किए जा रहे हैं ।

प्रो. शू-इश-इवाटा, टोकियो विश्वविद्यालय, जापान ने विशेष रूप से उच्च निष्पादन/क्षमता वाले कम्प्यूटरों की उपलब्धता के संदर्भ में मुक्त वैज्ञानिक आँकड़ों एवं विधि मामलों की उपयुक्तता पर बल दिया । समूचे विश्व में 70 करोड़ से भी अधिक लोग इन्टरनेट से जुड़े हुए हैं । प्रो. एन.बालकृष्णन, कम्प्यूटर केन्द्र, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूर ने ज्ञान/सूचना के आदान-प्रदान हेतु अंकीय पुस्तकालय अधिनियम की स्थापना/कार्य पर बल दिया । भारत के अंकीय पुस्तकालय पर बोलते हुए उन्होंने अपने संस्थान में कार्यान्वित की जा रही परियोजना के बारे में जानकारी दी । उन्होंने आगे कहा कि आँकड़ों/सूचनाओं का भण्डारण एवं सृजन सस्ता हो रहा है किन्तु संदेश मशीन द्वारा अधिक पढ़ा जाता है और पाठकों द्वारा कम ।

डॉ. आर.आर.केलकर, महानिदेशक, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने मौसम-विज्ञान के आँकड़ों की उपलब्धता पर अपने विचार व्यक्त किए । उन्होंने कहा वर्ष 1970 में कई राष्ट्रीय मौसम-वैज्ञानिक सेवाओं ने मौसम-विज्ञान सम्बन्धी आँकड़ों का निःशुल्क आदान -प्रदान शुरू किया था । वैश्विक दूर संचार सेवा के बाहर भी इन्टरनेट पर अधिक सूचनाप्रद आँकड़े उपलब्ध
हैं ।

चाय बागानों एवं रेलवे को अपने कार्यकलापों के परिचालन के लिए आँकड़ों की जरूरत पड़ती है इसलिए उन्होंने अपने आँकड़े-संग्रहण केन्द्र स्थापित किए हैं । उन्होंने आगे कहा कि इस क्षेत्र में अब स्वामित्व/मालिकाना हक की भी शुरुआत हो रही है । किसान, यात्री एवं पर्यटक, नगरों में रहने वाले सामान्य लोग एवं आपदाओं का सामना करने वाले लोग इन आँकड़ों का प्रयोग करते हैं जबकि इन आंकड़ों के विशिष्ट प्रयोगकर्ता विमानन, जहाजरानी तथा रक्षा स्थापनाओं के क्षेत्र के लोग हैं । इसमें दोनों प्रकार के लोग हैं जो लाभ और बिना किसी लाभ के लिए भी इन आँकड़ों का प्रयोग करते हैं ।

डॉ. एस शिवराम, निदेशक, एनसीएल ने इस अवसर पर अकादमी के सुप्रतिष्ठित सदस्यों का स्वागत किया । प्रो. सुरेन्द्र प्रसाद, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली तथा उपाध्यक्ष, इन्सा ने अकादमी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला । उन्होंने सर्च, ऐक्सेस, रिट्रीवल, हेल्प आदि जैसी विभिन्न विशिष्टताओं से युक्त इलेक्ट्रॉनिक पत्रिका पोर्टल (e-journals@insa project) के बारे में संक्षेप में जानकारी भी दी । इस बैठक का आयोजन डॉ.शिवराम एवं डॉ. सौरव पाल, प्रमुख, भौतिक रसायन एवं पदार्थ रसायन प्रभाग, एनसीएल द्वारा किया गया था । इस बैठक में स्थानीय सदस्यों के अलावा अकादमी के बाहरी 100 सदस्यों ने भी भाग लिया ।